सुचिन्द्रम्

नवीन कुमार जग्गी, आशना
तथा सायशा

सुचिन्द्रम् एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है, जो तमिलनाडु के कन्याकुमारी में स्थित है। इस तीर्थ स्थान की धार्मिक आस्था श्रद्धालुओं को सहज ही अपनी ओर खींच लाती है। इस स्थान पर भव्य 'स्थानुमलयन मंदिर' है। यह मंदिर सनातन धर्म में मान्य त्रिदेव - ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को समर्पित है। यह त्रिदेव यहाँ एक लिंग के रूप में विराजमान हैं। मंदिर का निर्माण नौवीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। उस काल के कुछ शिलालेख मंदिर में अब भी मौजूद हैं। सत्रहवीं शताब्दी में इस मंदिर को नया रूप दिया गया था। मंदिर में भगवान विष्णु की एक अष्ट धातु की प्रतिमा एवं पवनपुत्र हनुमान की 18 फुट ऊँची प्रतिमा विशेष रूप से दर्शनीय है।

थानुमलायन मंदिर, दक्षिण भारत के सबसे ज्यादा भ्रमण किये जाने वाले मंदिरों में से एक है, और यह अनुमान लगाना कि क्यों, कोई कठिन नहीं। मंदिर का गेट दूर से ही दिखाई पड़ता है, क्योंकि 134 फिट की भव्य ऊंचाई वाला टावर खड़ा है। टावर की खासियत इस पर बनी हुई विभिन्न देवी - देवताओं की मूर्तियां व नक्काशी है, जिस पर पौराणिक कथाओं से चित्र व घटनाओं का चित्रण किया गया है।

मंदिर के प्रवेश पर एक नक्काशी युक्त दरवाजा है, जो 24 फिट की भव्य ऊंचाई के साथ खड़ा है। मंदिर की बाहरी दीवार के ठीक बगल में ही एक गलियारा है। इस गलियारे में इसकी लंबाई के अनुसार मंडपम् व मंदिर फैले हुए हैं।

मंदिर लगभग तीस देवी देवताओं को समर्पित है, इसलिए यह भगवान शिव एवं विष्णु दोनों के भक्तों के बीच लोकप्रिय है। गर्भगृह में एक बड़े शिवलिंग के साथ ही इसके बगल में विष्णु की रखी गयी है।

त्रिलिंगम

यह लिंगम् केवल शिव को ही नही अपितु भगवान विष्णु व ब्रह्मा को भी समर्पित हैं, इसलिये इसे त्रिलिंगम्

कहा जाता है। यह यहाँ की मुख्य मूर्ति है, जो त्रिदेव को समर्पित है। तीनों देवों को एक साथ प्रदर्शित करने के कारण यह पूरे भारतवर्ष में अनूठी हैं।

भगवान् हनुमान की मूर्ति

मंदिर के अंदर भगवान् हनुमान की अति विशाल मूर्ति स्थापित हैं, जो लगभग 22 फीट ऊँची है, जिसे एक ही ग्रेनाइट के पत्थर को काट कर बनाया गया हैं। यह एक तरह से भारत की सबसे बड़ी मूर्तियों में से एक है व साथ ही इस मंदिर की भी मुख्य पहचान है। एक मान्यता के अनुसार भगवान हनुमान् ने माता सीता को अशोकवाटिका में इसी रूप में दर्शन दिए थे, जिनका रेखांकन इस मंदिर में मूर्ति के रूप में किया गया है।

नंदी की विशाल प्रतिमा

भगवान शिव के वाहन नंदी की भी यहाँ एक विशाल मूर्ति है, जिसकी ऊंचाई 13 फीट व लंबाई 21 फीट हैं। यह भी नंदी की मूर्तियों में भारत वर्ष में विशालतम मूर्तियों में से एक है।

चार मुख्य स्तंभ

यहाँ चार मुख्य स्तंभ हैं, जो एक ही चट्टान के पत्थरों से बने हैं। इन चारों में से विभिन्न वाद्य यंत्रों सितार, मृदंग, जलतरंग व तंबूरे के संगीत की ध्वनि आती है। प्राचीन समय में इन्ही से मंदिर में पूजा अर्चना व आरती की जाती थी। इस चारों वाद्य यंत्रों की सबसे अनोखी बात यह है, कि ये चारों एक ही चट्टान से बने होने के बाद भी अलग-अलग धुन निकालते हैं।

नृत्य कक्ष

यहाँ 1035 स्तंभ हैं, जिनसे ध्वनियाँ निकलती हैं। इस कक्ष को नृत्य मंडप या कक्ष के नाम से भी जाना जाता हैं।

मंदिर का गोपुरम्

मंदिर का गोपुरम् जो दूर से भी दिखाई पड़ता है, उस पर विभिन्न नक्काशियां करके चित्र व भित्तियां उकेरी गयी हैं। इसी के साथ यहाँ के विभिन्न स्तंभों पर भी अलग-अलग आकृतियाँ उकेरी गयी हैं, जिनसे मंदिर की भव्यता और भी अधिक बढ़ जाती हैं।

पौराणिक कथा

पौराणिक काल में इस स्थान पर 'ज्ञान अरण्य' नामक एक सघन वन था। इसी ज्ञान अरण्य में महर्षि अत्रि अपनी पत्नी अनुसूया के साथ रहते थे। अनसूया पतिव्रता स्त्री थी और पति की पूजा करती थीं। उन्हें एक ऐसी शक्ति प्राप्त थी कि वह किसी भी व्यक्ति का रूप परिवर्तित कर सकती थीं। भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पत्नियों को जब उनकी इस शक्ति के विषय में ज्ञात हुआ, तो उन्होंने अपने पति से देवी अनसूया के पतिव्रत धर्म की परीक्षा लेने को कहा।

उस समय ऋषि अत्रि हिमालय पर तप करने गए हुए थे। जब ब्रह्मा, विष्णु और महेश साधु के वेश में ऋषि के आश्रम पहुँचे और भिक्षा माँगने के लिए आवाज़ लगाई। उस समय देवी अनसूया स्नान कर रही थी। तीनों ने उनसे उसी रूप में बाहर आकर भिक्षा देने को कहा। जहाँ ब्राह्मणों को भिक्षा दिए बिना लौटाना अधर्म था, वहीं ऐसी अवस्था में परपुरुष के सामने आने से पतिव्रत धर्म भंग होता। देवी अनसूया को तो दोनों धर्मों का निर्वाह करना था। तब उन्होंने अपनी शक्ति के बल पर तीनों ब्राह्मणों को शिशु रूप में परिवर्तित कर दिया और उसी अवस्था में आकर भिक्षा प्रदान की।

जब त्रिमूर्ति के शिशु रूप में परिवर्तित होने का ज्ञान उनकी पत्नियों को हुआ, तो वे व्याकुल हो गईं। उन्होंने आश्रम में आकर देवी से क्षमा माँगी। तब उन्होंने उन्हें प्रभावमुक्त किया, लेकिन प्रतीक रूप में उन्हें आश्रम में रहने को कहा। उस समय त्रिमूर्ति ने अपने प्रतीक की स्थापना की, जिसके आधार पर ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपर शिव हैं।

एक अन्य कथा के अनुसार गौतम ऋषि ने देवराज इन्द्र को शाप दे दिया था। उनके अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए देवराज इन्द्र ने यहीं सुचिन्द्रम् में तपस्या की और उष्ण घृत से स्नान कर उन्होंने स्वयं को पाप से मुक्त किया और अर्धरात्रि को पूजा आरंभ की। पूजा संपन्न कर वे पवित्र हुए और देवलोक को प्रस्थान किया। तब से इस स्थान का नाम 'सुचिन्द्रम्' पड़ गया।

मंदिर की अनूठी स्थापत्य कला

17वीं शताब्दी में मंदिर को एक नया रूप प्रदान किया गया। मंदिर में करीब तीस पूजा स्थल हैं। इनमें से एक स्थान पर भगवान विष्णु की अष्टधातु की प्रतिमा विराजमान है। मंदिरप्रवेश के दाईं ओर सीता-राम की प्रतिमा स्थापित है। पास ही पवनपुत्र हनुमान की एक 18 फुट ऊंची प्रतिमा है। ऐसी मान्यता है, कि इसी विशाल रूप में हनुमान अशोकवाटिका में सीताजी के सामने प्रकट हुए और उन्हें श्रीराम की मुद्रिका दिखाई थी। पास ही गणेश मंदिर है, जिसके सामने नवग्रहमंडप है। इस मंडप में नौ ग्रहों की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की हुई हैं।

अलंगर मंडप में चार संगीतमय स्तंभ हैं। ये अनोखे स्तंभ एक ही चट्टान से बने हैं, लेकिन इनसे मृदंग, सितार, जल तरंग तथा तंबूरे की अलग-अलग ध्वनि गुंजित होती है। पहले पूजा-अर्चना के समय इन्हीं स्तंभों से संगीत उत्पन्न किया जाता था। मंदिर में नटराज मंडप भी है। मंदिर में 800 वर्ष पुरानी नंदी की विशाल प्रतिमा भी दर्शनीय है। द्वार पर दो द्वारपाल प्रतिमाएं है। मंदिर का गोपुरम् 134 फुट ऊंचा है। यह सप्त सोपान गोपुरम् मंदिर को अद्भुत भव्यता प्रदान करता है। इस पर बहुत-सी आकर्षक मूर्तियां उकेरी हुई हैं। मंदिर के निकट ही एक सुंदर सरोवर है। इसके मध्य में एक छोटा-सा मंडप बना है। सुचिन्द्रम् कन्याकुमारी से मात्र 13 किमी. दूर है।

मंदिर के मुख्य देवता भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान ब्रह्मा को एक ही रूप में स्तानुमल्याम कहा जाता है। स्तानुमल्याम तीन देवताओं को दर्शाता है जिसमें 'स्तानु' का अर्थ 'शिव' है, 'माल' का अर्थ 'विष्णु' है और 'आयन' का अर्थ 'ब्रह्मा' है। भारत के उन मंदिरों में से एक है, जिनमें त्रिमूर्ति व तीनों देवताओं की पूजा एक मंदिर में की जाती है।

यह मंदिर माता के 51 शक्तिपीठों में से एक है। इस मंदिर में शक्ति को नारायणी के रूप पूजा जाता है और भैरव को संहारभैरव के रूप में पूजा जाता है। पुराणों के अनुसार जहाँ-जहाँ सती के अंग के टुकड़े, धारण किए वस्त्र या आभूषण गिरे, वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ अस्तित्व में आये। ये अत्यंत पावन तीर्थस्थान कहलाते हैं। ये तीर्थ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी सती ने उनके पिता दक्षेश्वर द्वारा किये यज्ञ कुण्ड में अपने प्राण त्याग दिये थे, तब भगवान शंकर देवी सती के मृत शरीर को लेकर पूरे ब्रह्माण्ड का चक्कर लगा रहे थे इसी दौरान भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभाजित कर दिया था, जिसमें से सती के ऊपर के दांत इस स्थान पर गिरे थे।

पूर्वकालीन कथा के अनुरूप देवों के राजा इन्द्र को महर्षि गौतम द्वारा दिये गए अभिशाप से इस स्थान पर मुक्ति मिली थी।

सुचिन्द्रम् शक्तिपीठ में सभी त्यौहार मनाये जाते हैं विशेषकर शिवरात्रि, दुर्गापूजा और नवरात्र के त्यौहार पर विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। लेकिन दो प्रमुख त्यौहार हैं, जो इस मंदिर का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र हैं, 'सुचिंद्रम् मर्गली त्यौहार' और 'रथ यात्रा' हैं। इन त्यौहारों के दौरान, कुछ लोग भगवान की पूजा के प्रति सम्मान और समर्पण के रूप में व्रत (भोजन नहीं खाते) रखते हैं। त्यौहार के दिनों में मंदिर को फूलों व लाईट से सजाया जाता है। मंदिर का आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं के दिल और दिमाग को शांति प्रदान करता है।